ISSN - 2229-3620
UGC Approved Journal No. - 48819
हिन्दी

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 7, Issue 27 Oct - Dec 2017
Page Nos. 97-100

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

राष्ट्रीय आन्दोलन के वृहत संदर्भ में भारत छोड़ो आन्दोलन का योगदान

❒ डॉ0 किशोर कुमार*

शोध सारांश

भारत छोड़ो आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि जनसामान्य ने स्वयं को औपनिवेशिक गुलामी की मानसिकता से मुक्त कर स्वतन्त्रता की चेतना को प्राप्त कर लिया, भारत छोड़ो आन्दोलन से भारत में ब्रिटिश शासन के स्थायी होने तथा उसके अपराजेय होने की भारतीय जनमानस में प्रचलित धारणा को गहरा आघात लगा। भारत छोड़ो आन्दोलन की एक अन्य विशेषता देश के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन/प्रशासन को हटाकर समानान्तर सरकारों की स्थापना का प्रयास, यद्यपि सरकारी मशीनरी की दमनकारी प्रणाली के सामने में समानान्तर सरकारें ज्यादा दिन नहीं टिक पायी लेकिन इन्होंने भारतीय जनमानस को मनोवैज्ञानिक मजबूती प्रदान। उपर्युन्त शोध पत्र भारत छोड़ो आन्दोलन की प्रकृति, परिणाम एवं अन्य कार्यकारणों को विश्लेषित करने का एक संक्षिप्त प्रयास है।

भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की प्रकृति भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की भाँति बहुलतावादी है। इस संघर्ष में उदारवादी, वामपंथी, दक्षिणपंथी, समाजवादी, गांधीवादी एवं क्रान्तिकारी समस्त विचारधाराओं का सहअस्तित्व है, साथ ही जनजातियों, महिलाओं, किसानों, मजदूरों, बुद्धिजीवियों सहित समस्त धर्मों के अनुयायियों की हिस्सेदारी है। इस संघर्ष के विभिन्न मार्गों पर सतत प्रयासरत नेतृत्व एवं जनसामान्य का एक ही लक्ष्य था– भारत की आजादी। 1857 के राष्ट्रीय विद्रोह से (जिसे हम प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के नाम से भी जानते हैं) लेकर 1947 में आजादी प्राप्ति तक 90 वर्ष के कालखण्ड को भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष कहा जाता है।

भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में भारत छोड़ो आन्दोलन की पृष्ठभूमि, प्रकृति एवं प्रस्थिति विशिष्ट महत्व की है। यह आन्दोलन द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य पुष्पित, पल्लवित हुआ। सितम्बर 1939 में विश्व युद्ध प्रारम्भ होने पर ब्रिटिश सरकार ने बिना भारतीय नेतृत्व को विश्वास में लिये बिना भारत, भारतीय संसाधनों और भारतीय सैनिकों को युद्ध में झोंक दिया। यह बड़ा ही विडम्बनापूर्ण है कि पूर्ण शोषणकारी ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन ने सर्वसत्तावादी (नाजीवादी एवं फांसीवादी) ताकतों को मानवजाति के लिए बड़ा खतरा बताया परन्तु अपनी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक व्यवस्था में न तो तत्काल ही कोई सुधार किया और न ही भविष्य हेतु कोई आश्वासन दिया गया। ब्रिटिश हुकुमत मात्र डेमिनियन स्टेटस देने की बात भी सतही तौर कर रही थी। इन परिस्थितियों में भारतीय नेतृत्व के समक्ष एक धर्म संकट उत्पन्न हो गया कि अगर बिना शर्त युद्ध में ब्रिटिश सरकार का समर्थन करते हैं तो भारत की आजादी का क्या होगा और यदि युद्ध में ब्रिटिश सरकार का विरोध करते हैं तो सर्वसत्तावादी (नाजीवाद और फांसीवाद) शक्तियों के विजयी होने का खतरा था, जो भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल सिद्धान्तों के विरुद्ध विचारधारा थी। भारतीय नेतृत्व के मध्य एक समस्या यह भी थी कि जिन्ना और मुस्लिम लीग का कांग्रेस से मतभेद था परन्तु कांग्रेस के अन्दर मौजूद मतभेदों का प्रश्न तुलनात्मक रूप से ज्यादा बड़ा था। सुभाष चन्द्र बोस का यह मानना था कि "यह परिदृश्य भारत की आजादी को प्राप्त करने का सबसे शुभ अवसर है, बोस ने कहा कि ब्रिटेन का दुश्मन हमारा मित्र है इसलिए युद्ध में भारत को खुलकर ब्रिटेन का विरोध करना चाहिए।" वही महात्मा गांधी ब्रिटेन की समस्याओं का लाभ नहीं उठाना चाहते थे, वे साध्य (लक्ष्य) और साधन (माध्यम) दोनों की पवित्रता की बात करते हैं। महात्मा गांधी सत्याग्रह और अहिंसा की बात विश्व के समक्ष रखना चाहते हैं। गांधी जी जर्मनी के यहूदियों को भी हिटलर की तानाशाही के विरुद्ध यही तरीका सुझाते हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों में कांग्रेस का नेतृत्व मध्यमार्गी विकल्प का चुनाव करता है और ब्रिटिश सरकार को युद्ध में सशर्त सहयोग का प्रस्ताव रखता है कि ब्रिटिश शासन तुरन्त केन्द्र में एक उत्तरदायी सरकार गठित करे साथ ही भविष्य के प्रश्न पर एक संविधान सभा का गठन किया जाये, जो स्वतन्त्र भारत का

*एसोसिएट प्रोफेसर–इतिहास कु.मा.रा.म.स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर